विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 3 | अंक : 12 | दिसंबर, 2010

आप्रवासी भारतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

3, 4, 5 दिसंबर सन् 2010 को मॉरीशस के महात्मा गाँधी संस्थान में हिंदी स्पीकिंग युनियन द्वारा तीन दिवसीय 'आप्रवासी भारतीय' अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

इसमें मॉरीशस के रचनाकार, प्राथमिक और विश्वविद्यालयीय स्तर के अध्यापक और प्राध्यापक, साहित्य मर्मज्ञ, आलोचक, छात्र, विभिन्न शैक्षिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा समस्त हिंदी प्रेमियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। नीदरलैंड के हिंदी युनिवर्स फ़ाउण्डेशन की निदेशिका प्रो. पुष्पिता अवस्थी, सुरीनाम के श्री भगवान प्रसाद, फ़ीजी के यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथ पसिफ़िक की प्रवक्ता डॉ. इंदु चंद्रा तथा फ़ीजी से ही मीडिया में कार्यरत श्री सैलेश कुमार आए हुए थे ।

प्रो. पुष्पिता अवस्थी और लेडी पद्मा घरभरन।

सम्मेलन का उद्घाटन महात्मा गाँधी संस्थान के भव्य सभागार में हुआ जिसमें हिंदी संगठन की संरक्षिका लेडी पद्मा घरभरन, हिंदी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति, भारतीय उच्चायोग के द्वितीय महासचिव श्री मिमांसक तथा नीदरलैंड की प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने अपने सशक्त भाषणों द्वारा आप्रवासी भारतीयों पर आधारित इस सम्मेलन के महत्त्व और आवश्यकता को रेखांकित किया ।

उस अवसर पर हिंदी संगठन की स्मारिका तथा नवरूप में प्रकाशित सुमन पत्रिका का विमोचन हुआ । साथ ही प्रो. पुष्पिता अवस्थी द्वारा रचित त्रैभाषिक कविता संग्रह 'शैल प्रतिमाओं' का लोकार्पण लेडी पद्मा घरभरन द्वारा हुआ ।

रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए । सम्मेलन मुख्यतः पाँच सत्र में विभाजित था जिनके मुख्य विषय इस प्रकार रहे - हिंदी शिक्षण एवं प्रशिक्षण, हिंदी प्रचार हेतु गतिविधियाँ, सांस्कृतिक विरासत की रक्षा, स्थानीय साहित्य एवं प्रकाशन तथा श्रव्य-दृश्य साधन ।

पुस्तक विमोचन के दौरान
श्री भगवान प्रसाद, प्रो. पुष्पिता अवस्थी और लेडी पद्मा घरभरन।

विदेशी वक्ताओं के साथ-साथ स्थानीय विद्वानों ने भी सभी विषयों पर गहन शोधयुक्त विचार प्रस्तुत किए । डॉ. उदयनारायण गंगू, श्री धनराज शंभु, आचार्य सुनील, श्रीमती कल्पना लालजी और श्री विश्वनाथ करिमन के नाम उल्लेखनीय हैं ।

प्रत्येक सत्र के पश्चात् महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया गया । 5 दिसंबर के समापन समारोह में कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुन्नी जी उपस्थित थे जिन्होंने इस सम्मेलन के आयोजन के लिए हिंदी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति तथा इसमें भाग लेने वाले सभी लोगों को इस स्पृहणीय कार्य के लिए सराहा तथा भावी कार्यक्रमों के लिए शुभकामनाएँ प्रदान कीं ।
सम्मेलन से संबद्ध अन्य कार्यक्रम इस प्रकार थे :

2 दिसंबर को इंडियन डायास्पोरा और भोजपुरी सेंटर द्वारा सत्संग,

4 दिसंबर को मंत्री मुकेश्वर चुन्नी की उपस्थिति में मॉरीशस आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा द्वारा 'मणिलाल डॉक्टर' नाटक का मंचन,

5 दिसंबर को मॉरीशस सनातन धर्म टेम्पल्स फ़ेडेरेशन द्वारा रामायण सत्संग,

6 दिसंबर को महात्मा गाँधी संस्थान के प्रवक्ताओं के साथ 'इंडियन डायास्पोरा' पर विचार-विमर्श।

10 दिसंबर को डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र जी की अध्यक्षता में कवि संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें मुख्यत: कवयित्री प्रो. पुष्पिता अवस्थी का अविस्मरणीय काव्य-पाठ हुआ। साथ ही स्थानीय रचनाकारों ने भी अपनी सृजनात्मकता का रसास्वादन कराया। यथा-श्रीमती भानुमती नागदान, श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ, डॉ. राजरानी गोबिन, डॉ. लालदेव हेमराज, श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल, श्रीमती सुमती बुधन और डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा। इस भव्य सम्मेलन की सफ़ल परिणति के रूप में कला एवं संस्कृति मंत्रालय के संरक्षण में 'अंतर्राष्ट्रीय भारतवंशी सांस्कृतिक परिषद' का गठन हुआ जिसकी सार्वजनिक घोषणा हुई।

इस अंतर्राष्ट्रीय परिषद का मुख्यालय मॉरीशस में होगा जो नीदरलैंड के हिंदी युनिवर्स फ़ाउण्डेशन के सहयोग और निर्देशन से वैश्विक स्तर पर सक्रिय रहेगा। इसके संरक्षक सुरीनाम के श्री भगवान प्रसाद और अध्यक्ष मॉरीशस के श्री राजनारायण गति हैं। इस 'अंतर्राष्ट्रीय भारतवंशी सांस्कृतिक परिषद' के संविधान के कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे इस प्रकार हैं:

1. सभी भारतवंशी बहुल देशों की सरकारी और गैरसरकारी सांस्कृतिक, शैक्षिक, धार्मिक संस्थाएँ इसके मानक सदस्य हैं।

2. हिंदी तथा उसके परिवार की भारतवंशी बोलियों तथा भारतवर्ष की सभी वैधानिक भारतीय भाषाएँ अंतर्राष्ट्रीय भारतवंशी सांस्कृतिक परिषद के अंतर्गत होंगी।

3. अभिनय, नृत्य, संगीत जैसी कला, संस्कृति और साहित्य की समस्त सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थाएँ परिषद के औपचारिक सदस्य हैं।

4. हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा घोषित करवाना परिषद की पहली प्राथमिकता है और इसके लिए विश्वस्तरीय अभियान जारी रहेगा।

5. भारतवंशी बहुल देशों में अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिषद की जितनी भी संस्थाएँ गठित होंगी उनकी युवा, महिला और बच्चों की अलग शाखाएँ होंगी तथा हिंदी एवं हिंदी परिवार की वैश्विक बोलियों में रचित साहित्य और संगीत की सामग्री सभी प्रतिनिधि संस्थाओं में उपलब्ध रहेंगी।••

संयोजक : डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा
अंतर्राष्ट्रीय भारतवंशी सांस्कृतिक परिषद.

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

मैथिलीशरण गुप्त

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता

विषय :

"हिंदी कैसे बने संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा"

परिणाम

प्रथम स्थान

श्री नारायण कुमार

द्वितीय स्थान

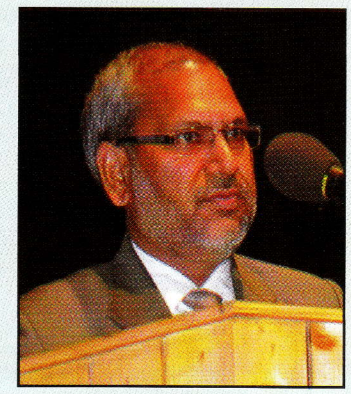

डॉ. जयप्रकाश कर्दम

तृतीय स्थान

श्रीमती तीना जगू मोहेश

निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से हार्दिक बधाई। ••

संपादकीय

बढ़ने लगीं गतिविधियाँ

विश्व हिंदी सचिवालय का यह त्रैमासिक प्रकाशन 12वें अंक के साथ अपने प्रकाशन के तीन वर्ष पूरे कर रहा है । इन तीन वर्षों के दौरान हमने वैश्विक स्तर पर हिंदी प्रेमियों एवं हिंदी सेवी संस्थाओं द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों से सुधी पाठकों को अवगत कराने का एक विनम्र प्रयास किया है। साथ ही अपने वार्षिक प्रकाशन 'विश्व हिंदी पत्रिका' के माध्यम से विश्वव्यापी हिंदी पाठकों तक हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र में हुई प्रगति की जानकारी भी समेकित रूप में प्रस्तुत की है।

अब तक हमारी वार्षिक पत्रिका के दो अंक प्रकाशित हो चुके हैं । संभवत: ये दोनों अंक आपको प्राप्त भी हुए होंगे । इस वार्षिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ आप भी अपना अद्यतन लेख भेज सकते हैं । वर्ष 2011 की वार्षिक पत्रिका के लिए अपना लेख भेजने की कृपा करें। आपका लेख वैश्विक स्तर पर हिंदी की गतिविधियों, हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण एवं हिंदी साहित्य पर केंद्रित हो । यदि आपने प्रथम से लेकर आठवें तक किसी भी विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लिया हो और उससे संबंधित कोई रोचक संस्मरण आप लिखना चाहें तो हमारे आगामी वार्षिक प्रकाशन में उसे भी स्थान दिया जाएगा। इसके अलावा यदि आपके पास द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन से लेकर आठवें विश्व हिंदी सम्मेलनों में से किसी भी सम्मेलन में मुख्य अतिथि अथवा अध्यक्ष महोदय द्वारा दिया गया भाषण सुरक्षित हो तो आप विश्व हिंदी सचिवालय को भेज सकते हैं। हम ये भाषण आपके प्रति आभार प्रकट करते हुए प्रकाशित करेंगे। हमारी वार्षिक पत्रिका : 2010 में हमने प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी एवं मॉरीशस के राष्ट्रपिता व पूर्व प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम के भाषण प्रकाशित किए हैं। ये भाषण हमें श्री नारायण कुमार जी के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं।

त्रैमासिक विश्व हिंदी समाचार एवं वार्षिक 'विश्व हिंदी पत्रिका' के प्रकाशन के अलावा इस बीच विश्व हिंदी सचिवालय ने दिसंबर, 2010 में पहली बार एक अंतर्राष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया था। निबंध का विषय था 'हिंदी कैसे बने संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा'। इस प्रतियोगिता का परिणाम 10 जनवरी, 2011 को विश्व हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर घोषित किया जाएगा । मॉरीशस के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने 10 जनवरी, 2011 को आयोजित होने वाले विश्व हिंदी दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारने की स्वीकृति प्रदान की है । इस अवसर पर आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित दक्षिण कोरिया की हिंदी विदुषी प्रो. किम ऊ जो ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लेने के प्रति अपनी सहमति भेजी है ।

इस बार विश्व हिंदी दिवस : 2011 के अवसर पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन भी मॉरीशस में किया जा रहा है । इस संगोष्ठी में देश-विदेश के गणमान्य हिंदी प्रेमियों के भाग लेने की संभावना है ।

इस तरह विश्व हिंदी सचिवालय अपने लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ रहा है । इसकी गतिविधियाँ बढ़ रही हैं। असंख्य हिंदी प्रेमी इन गतिविधियों से जुड़ने लगे हैं । निश्चित ही यह संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के अपने उद्देश्य में शीघ्र ही सफल होगा। इसके लिए वैश्विक वातावरण बनना प्रारंभ हो गया है। भारत संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बन जाने पर यह कार्य और भी आसान हो जाएगा ।

विश्व हिंदी समाचार के इस बारहवें अंक के प्रकाशन के साथ ही विश्व हिंदी सचिवालय में मेरी प्रतिनियुक्ति के तीन वर्ष भी पूरे हो रहे हैं। मैं 14 फरवरी, 2011 से एनटीपीसी लिमिटेड, भारत में पुन: अपना कार्यभार ग्रहण कर लूँगा । भविष्य में आप +91 9650990245 अथवा rpmishra_666@yahoo.co.in पर मुझसे संपर्क कर सकते हैं ।

विश्व हिंदी सचिवालय में मेरे कार्यकाल के दौरान जिन विश्वव्यापी हिंदी प्रेमियों ने अपने सहयोग से सचिवालय का काम आसान किया है, मैं उन सबके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। मैं समस्त मॉरीशसवासियों को अपना हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनके मार्गदर्शन एवं सक्रिय सहयोग से सचिवालय की गतिविधियाँ अबाध रूप से चलती रहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आपका सहयोग इसी तरह सचिवालय को मिलता रहेगा। ••

आप सबको पुन: धन्यवाद।

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

प्रधान संपादक
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति सियांबर, विजया सरजु

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu
whsmauritius@gmail.com

लंदन में प्रथम हिंदी छात्र सम्मेलन

'यू.के हिंदी समिति' के 20 वर्ष एवं 'हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता' के दस वर्ष के उपलक्ष्य में लंदन के नेहरू केंद्र में दिनांक 26 सितंबर को प्रथम हिंदी छात्र सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में यू.के. के विभिन्न शहरों से हिंदी के सैकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया। सम्मेलन में 4 वर्ष की आयु से लेकर 25 वर्ष की आयु तक के छात्र उपस्थित थे।

इस अवसर पर विद्यार्थी कमलेश वालिया और कार्तिक सुब्बुराज ने इंटरनेट के माध्यम से हिंदी सीखने की विधा बताई और पावर प्वाइंट द्वारा अत्यंत रोचकता से अन्य छात्रों को हिंदी के विभिन्न वेबसाइट से परिचित कराया।

'यू.के हिंदी समिति' के अध्यक्ष डॉ. पदमेंश गुप्त ने कहा, 'इस सम्मेलन का उद्देश्य है कि ब्रिटेन के हिंदी छात्रों का एक नेटवर्क तैयार हो और इन विद्यार्थियों को एक ऐसा मंच मिले जिससे वे कम से कम साल में एक बार आपस में मिल सकें।' इस अवसर पर हिंदी बाल भवन-सरे तथा बर्मिंघम के कुछ विद्यार्थियों ने लघु नाटक एवं नृत्य की प्रस्तुति कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। हास्य-व्यंग्य से भरपूर यह नाटक छात्रों तथा उनकी शिक्षिकाओं ने मिल कर स्वयं रचा।

हिंदी अध्यापिका सुश्री सुरेखा चोफला ने इस अवसर पर भारत के नक्शे पर आधारित छात्रों को टीम-बिल्डिंग एक्सरसाइज़ करवाई तथा साँप और सीढ़ी के खेल के माध्यम से हिंदी के प्रश्न-उत्तर के सत्र का संयोजन किया जिसमें हिंदी छात्रों ने जम कर भाग लिया।

श्रीमती देवीना रिशी ने 'हिंदी सिनेमा वाह !वाह!, हिंदी सिनेमा छी!छी!' पर मनोरंजक बहस का संयोजन किया जिसमें अनेक छात्रों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

'यू.के. हिंदी समिति' की उपाध्यक्ष और 'पुरवाई' पत्रिका की सह-संपादक श्रीमती उषा राजे ने छोटी उम्र के बच्चों को स्व रचित बाल कथा 'जादूई बुलबुला' के माध्यम से भारतीय संस्कृति की महत्ता मनोरंजक ढंग से बताई। इस सत्र में बच्चों के साथ उनके माता-पिता भी दत्तचित श्रोता थे।

हिंदी के सभी छात्रों एवं अभिवावकों ने इस अवसर पर अंताक्षरी के माध्यम से हिंदी गानों की प्रस्तुति की।

सम्मेलन के अंत में ब्रिटेन के इन छात्रों ने भारत के वरिष्ठ साहित्यकार स्व. कन्हैया लाल नंदन जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

यू.के. हिंदी समिति के श्री वेद मोहला, डॉ. ऋषि अग्रवाल, इस्माइल चुनेरा, के.बी.एल. सक्सेना, उषा राजे सक्सेना, सुरेखा चोपला, अंजलि सुब्बुराज, शशि वालिया, देविना रिशि, पियूष गोयल एवं कृति यू.के. की तितिक्षा शाह, अख्तर गोल्ड, मधु शर्मा, मीना कुमारी और बाल भवन की शशि वालिया ने अपनी उपस्थिति से आयोजन को गरिमा प्रदान की। ••

गाँधी जी पर आधारित हिंदी फ़िल्म का शुभारंभ पोर्टब्लेयर में

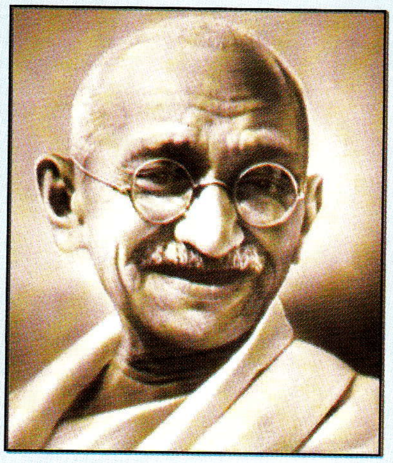

आइलैंड फ़िल्म प्रोडक्शन के द्वारा गाँधी जी पर आधारित एक हिंदी फ़िल्म का शुभारंभ पोर्टब्लेयर में हुआ। फ़िल्म की कथा, निर्माण एवं निर्देशन नरेश चंद्र लाल द्वारा किया जा रहा है। कई राष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता श्री लाल की अंडमान आधारित 'अमृत जल' फ़िल्म चर्चा में रही है। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के डाक निदेशक एवं चर्चित साहित्यकार कृष्ण कुमार यादव ने मुहूर्त क्लैप शॉट देकर फ़िल्म का शुभारंभ किया। फ़िल्म सेंसर बोर्ड, कोलकाता रीजन के सदस्य नंद किशोर सिंह ने मुहूर्त-नारियल तोड़ा। इस अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए डाक निदेशक कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि - ''गाँधी जी की प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी और अपने विचारों के कारण वे सदैव जीवित रहेंगे। 'काला-पानी' कहे जाने वाले अंडमान के द्वीपों में वे भले ही कभी न आए हों, पर द्वीप-समूहों ने भावनात्मक स्तर पर उन्हें अपने करीब महसूस किया है। जाति-धर्म-भाषा क्षेत्र की सीमाओं से परे जिस तरह द्वीपवासी अपने में एक 'लघु भारत' का एहसास कराते हैं, वह गाँधी जी के सपनों के करीब है।'' श्री यादव ने फ़िल्म इंडस्ट्री से जुड़े लोगों के अंडमान से लगाव पर प्रशंसा ज़ाहिर की और आशा व्यक्त की कि ऐसी फ़िल्में द्वीप-समूहों की ऐतिहासिकता, प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ सेलुलर जेल जैसे क्रांति-तीर्थ स्थलों को बढ़ावा देने में भी सफल होंगी।

गौरतलब है कि इस फ़िल्म में बॉलिवुड के जाने-माने चेहरे मुकुल नाग, अनुकमल, राजेश जैश, मुंबई फ़िल्म उद्योग के मनोज कुमार यादव के अलावा स्थानीय कलाकार गीतांजलि आचार्य, कृष्ण कुमार विश्वेंद्र, रविंदर राव, डी.पी.सिंह, ननकौड़ी के रशीद, पर्सी आयरिश मेयर्श तथा पोर्टब्लेयर महात्मा गाँधी स्कूल के चार बच्चे भी काम करेंगे।

निर्देशक नरेश चंद्र लाल ने बताया कि सेलुलर जेल के बाद महाराष्ट्र के वर्धा स्थित गाँधी आश्रम सेवाग्राम में भी इस फ़िल्म की शूटिंग होगी । ••

प्रस्तुति : नरेश चंद्र लाल, निदेशक
अंडमान पीपुल थिएटर एसोसिएशन (आप्टा), पोर्टब्लेयर

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में कवि सम्मेलन

सिडनी । इस वर्ष ऑस्ट्रेलिया में हिंदी दिवस पर राष्ट्र भाषा हिंदी की धूम रही । ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न शहरों में तरह-तरह के उत्सवों का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी प्रेमियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया । हिंदी आज विश्व की सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान पर है और पिछली जनगणना के अनुसार ऑस्ट्रेलिया में क़रीब चालीस हज़ार व्यक्तियों की प्रथम भाषा हिंदी है । हिंदी की शिक्षा दो यूनिट के रूप में हाई-स्कूल के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है । कुछ वर्ष पहले हिंदी सिडनी विश्वविद्यालय में भी थी परंतु अब वह प्रौढ़ शिक्षा का एक भाग बन कर रह गई है । यहाँ विभिन्न स्तरों पर हिंदी सिखाई जाती है । कैनबेरा और मेलबर्न विश्वविद्यालय में हिंदी पत्राचार से सीखी जा सकती है ।

हिंदी दिवस के अवसर पर 11 सितंबर को सिडनी में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका आयोजन व संचालन सिडनी की लोकप्रिय कवयित्री रेखा राजवंशी ने किया और स्वेच्छा कुलश्रेष्ठ ने इसमें सहयोग दिया । कवि सम्मेलन में मेलबर्न के सुभाष शर्मा, कैनबेरा के किशोर नंगरानी ने भाग लिया, सिडनी के सभी गणमान्य कवि भी यहाँ उपस्थित थे । भारतीय कौंसलावास से श्री विवेक कुमार ने दीप जलाकर कवि सम्मेलन का शुभारंभ किया, प्रसिद्ध ग़ज़लकार ओम कृष्ण राहत ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की, सिडनी के मुख्य कवियों में शैलजा चतुर्वेदी, अब्बास राजा अल्वी, अनिल वर्मा, डॉ. भावना कुंवर और रेखा राजवंशी थे । अनिल वर्मा जी की स्वरबद्ध 'सरस्वती स्तुति', शैलजा जी का गीत, 'राजा जी की रंगीन पतंग', सुभाष जी की माइग्रेशन पर कविता, किशोर जी के राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य, रेखा राजवंशी के 'बचपन गीत' सबने पसंद किया । इसमें कुछ सिख कवियों ने भी हिस्सा लिया और हिंदी के प्रति अपना प्रेम दर्शाया । पिच्चासी साल के इकबाल, जसबीर वालिया, संत राम बजाज और हैरी वालिया की कविताएँ लोगों ने पसंद कीं ।

इस कवि सम्मेलन की विशेषता थी कि इसमें युवा पीढ़ी को भी जोड़ा गया था जो आगे चलकर हिंदी का प्रचार-प्रसार करेगी । युवा कवि पच्चीस वर्ष से कम आयु के थे और उनमें मुख्य थे राहिल और दिव्या । यह देखकर आश्चर्य हुआ कि ये युवा कवि इतनी अच्छी हिंदी में कविता लिख रहे हैं। दिव्या ने तो हिंदी की शिक्षा भी नहीं ली परंतु उसके पिता को समर्पित कविता प्रशंसनीय थी । पुनीत, संजम, आँचल और आकांक्षा हिंदी विषय के रूप में पढ़ रहे हैं और उन्होंने सुभद्रा कुमारी चौहान की 'ख़ूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी' पढ़ कर सबको अपना बचपन याद दिला दिया । कुल मिलाकर 21 कवियों ने भाग लिया ।

रेखा राजवंशी

युवा पीढ़ी की कविताओं को सबने सराहा । कवि सम्मेलन में क़रीब दो सौ श्रोता उपस्थित थे । कार्यक्रम में कुछ स्थानीय संस्थाओं ने सहयोग दिया था सबके नाम लिखने मुश्किल हैं परंतु शर्मा किचेन, मोरगेज सोलुशन, होर्न्सबी सीनियर सिटिज़न, इंडियन डाउन अंडर, एस बी एस रेडियो और हिंदी गौरव इसमें मुख्य थे । श्रोताओं की संख्या और उनका उत्साह देखकर ऐसा लगता है कि कविता सबके मन में दबी है ख़ासकर प्रवासियों के मन में, जो हर पल अपने देश से जुड़े रहना चाहते है, कविता के माध्यम से शायद उनके व्यथित मन को राहत मिलती है और कुछ क्षण के लिए वे वापस देश लौट जाते हैं । अपने रिश्तेदारों के बीच अपने बचपन के गाँव में । ••

सिडनी से रेखा राजवंशी की रिपोर्ट

हिंदी का व्याकरण अपेक्षाकृत सरल है; इसके अतिरिक्त लिपि तथा उच्चारण में पूर्ण सामंजस्य है; अत: हिंदी का काम चलाऊ ज्ञान बड़ी सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है । कृत्रिम पारिभाषिक शब्दों के निर्माण से अप्रचलित संस्कृत संज्ञाओं के बाहुल्य के कारण आजकल हिंदी का सरल स्वाभाविक रूप संकट में पड़ा है । हमारे प्रतिभाशाली साहित्यकारों की सहायता से यह संकट दूर हो सकता है । कुछ रचनाओं में बेचारी हिंदी सिर से पैर तक कृत्रिम अलंकारों से लदी निष्प्राण मध्यकालीन कुलवधू बन गई । वह गुड़ियानुमा रूप उत्तर भारत की संस्कृति का वाहक नहीं बन सकता है; हमारे साहित्यकारों से आशा की जाती है कि वे जनता की भाषा के आधार पर हिंदी का ऐसा रूप प्रस्तुत करेंगे, जो जीता-जागता हो, जो यौवन के उल्लास से कूट-कूट कर भरा हो, जो अपने सहज-स्वाभाविक सौंदर्य द्वारा समस्त देश को मुग्ध करने में समर्थ हो ।

फ़ादर कामिल बुल्के

ऑस्ट्रेलिया में 'हिंदी गौरव' के प्रथम मुद्रित संस्करण का लोकार्पण

गणमान्य अतिथियों द्वारा 'हिंदी गौरव' का लोकार्पण

2 अक्टूबर को गाँधी जयंती एवं लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर सिडनी में हिंदी के क्षेत्र में एक नया स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया। 'हिंदी गौरव' ऑनलाइन समचार-पत्र की सफलता के पश्चात सिडनी गुजरात भवन, सिडनी में करीब 250 लोगों की उपस्थिति में 'हिंदी गौरव' के प्रथम प्रिंट संस्करण का विमोचन भारत के कौंसुल जनरल, सिडनी माननीय अमित दास गुप्ता के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में पेरामेटा से सांसद माननीय तान्या गेडियल, डिप्टी स्पीकर एन.एस डब्लू संसद, माननीय सांसद फिलिप रुड़क (पूर्व मंत्री), माननीय सांसद लौरी फर्गुसन आदि थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सिडनी की प्रतिष्ठित रंगमंच अभिनेत्री ऐश्वर्या निधि ने सभी उपस्थित गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए किया। 2 अक्टूबर को गाँधी जी एवं लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिवस पर दोनों को याद करते हुए उनके जीवन एवं योगदान पर प्रकाश डाला। ऐश्वर्या निधि इस कार्यक्रम की संचालिका थी जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न कराया।

सबसे पहले 'हिंदी गौरव' की संरक्षक डॉ. शैलजा चतुर्वेदी ने बोलते हुए 'हिंदी गौरव' की ओर से सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया एवं इस शुभ अवसर पर सभी के अमूल्य सहयोग के लिए सभी का कोटि-कोटि धन्यवाद दिया। उन्होंने सिडनी की विभिन्न संस्थाओं एवं व्यक्तियों का उल्लेख करते हुए सिडनी में हिंदी की यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदी समाज द्वारा हिंदी के क्षेत्र में किये गए कार्यों का उल्लेख किया। डॉ. शैलजा चतुर्वेदी ने 'हिंदी गौरव' ऑनलाइन समचार-पत्र की सफलता का उल्लेख करते हुए इसको प्रिंट मिडिया में लाने के लिए सभी के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। हिंदी गौरव को हर आदमी तक पहुंचने के लक्ष्य को बताते हुए उन्होंने सिडनी में भारतीय समुदाय में हिंदी के महत्व को भी उजागर किया। आपने कुछ बेहद उम्दा कविताएं लोगों को सुनाई।

विशिष्ट अतिथि तान्या गेडियल ने महात्मा गांधी जी द्वारा किये गए कार्यों की सराहना की एवं उनके अहिंसा के सिद्धांत का आज के परिवेश में उल्लेख किया। आपने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का भी उल्लेख किया। आपने 'हिंदी गौरव' की बढ़ती लोकप्रियता को सराहा, एवं 'हिंदी गौरव' की टीम को विमोचन के अवसर पर हार्दिक बधाई दी।

सांसद फिलिप रुड़क (पूर्व मंत्री) एवं सांसद लौरी फर्गुसन ने इस कार्यक्रम में दो अक्टूबर के महत्व पर प्रकाश डालते हुए गाँधी एवं लाल बहादुर शास्त्री के जीवन का उल्लेख किया तथा 'हिंदी गौरव' के शुभारंभ पर बधाई दी। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए भारत के कौंसुल जनरल सिडनी माननीय अमित दास गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि बापू सारी दुनिया में शांति चाहते थे। उन्होंने महात्माजी के संदेशों को विस्तार से समझाया और कहा कि उनकी मृत्यु के इतने लंबे समय बाद भी उनके विचार सारी दुनिया के लिए प्रासंगिक हैं। आपने लाल बहादुर शास्त्री के जीवन पर भी प्रकाश डाला। आपने 'हिंदी गौरव' की टीम को हिंदी को ऑस्ट्रेलिया में लोकप्रिय बनाने के लिए प्रेरित किया एवं समाज में समाचार-पत्र के महत्व को बताते हुए कहा कि समाचार पत्र समाज का आईना होता है। आपने हिंदी गौरव की टीम को सहयोग देने का आश्वासन दिया।

माननीय अमित गुप्ता ने अपने संबोधन के बाद हिंदी गौरव के प्रथम प्रिंट संस्करण का विमोचन किया जिसमें सांसद माननीया तान्या गेडियल डिप्टी स्पीकर एन एस डब्लू संसद, माननीय सांसद फिलिप रुड़क (पूर्व मंत्री), माननीय सांसद लौरी फर्गुसन एवं डॉ. शैलजा चतुर्वेदी ने सहयोग किया।

हिंदी गौरव के विमोचन के बाद अभिनय स्कूल ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स के सौजन्य से कई रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। इन रंगारंग कार्यक्रमों में मनमोहक नृत्य, भांगड़ा एवं देशभक्ति एवं उम्दा गायन सम्मिलित थे। इस अवसर पर दो बच्चियों तान्या एवं पेरिस द्वारा 'जय हो' पर नृत्य ने सभी का मन मोह लिया। इसके बाद निष्ठा कुलश्रेष्ठ ने एक मिश्रित गाने पर नृत्य किया। जैसा की अधिकतर कार्यक्रम भांगड़ा के बिना अधूरा होता हैं, इसमें भी जसदेव भाटिया द्वारा एक बेहद आर्कषक भांगड़ा प्रस्तुत किया गया। लता, राजेंद्र बालस्कर एवं भैरव वर्मा द्वारा मनमोहक गायन प्रस्तुत किये गए। नेहा दबे ने बहुत खूबसूरत नृत्य पेश किया। आप सिडनी की एक होनहार डांसर हैं।

सिडनी में हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देनेवाले कवि एवं लेखक अब्बास रज़ा अल्वी ने 'हिंदी गौरव' की ओर से सभी अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों को आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के समापन पर 'हिंदी गौरव' के मुख्य संपादक अनुज कुलश्रेष्ठ ने 'हिंदी गौरव' को सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद दिया और इस अवसर पर हिंदी गौरव से जुड़े हुए सभी सदस्यों का उपस्थितजनों से परिचय कराया। 'हिंदी गौरव' के तकनीकि प्रमुख हेमेंद्र नेगी हैं। यह कार्यक्रम सिडनी गुजरात भवन में प्रथम कार्यक्रम था और इस भवन का शुभारंभ भी हिंदी गौरव के विमोचन के साथ हुआ। यह भवन ऑस्ट्रेलिया में भारतीय समुदाय का पहला भवन है। ••

Hindi – Khabar. hindyugm.com

हिंदी आज भारत तक ही सीमित नहीं, बल्कि विश्व के विराट फलक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है और एक विश्वभाषा के रूप में तेज़ी से उभर रही है। हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं, भारतीय संस्कृति की सबल, समर्थ और सशक्त संवाहिका है, जो विदेशों में करोड़ों की संख्या में बसे प्रवासी भारतीयों और भारतीय मूल के लोगों के बीच आत्मीयता के सीधे सूत्र स्थापित करने और उन्हें भारत, भारतीयता तथा भारतीय संस्कृति से निरंतर जोड़े रखने में एक सशक्त माध्यम का काम करती है। इसीमें वे अपनी अस्मिता की पहचान भी पाते हैं।

(प्रयास वर्ष : 20, अंक : 2 से साभार)

यू.के. में हिंदी पत्रकारिता

सेमिनार में पधारे गणमान्य अतिथि

दिनांक 7 नवंबर, 2010 को नेहरू केंद्र लंदन में यू.के. हिंदी समिति की बीसवींवर्षगांठ के सुअवसर पर यू.के. में हिंदी पत्रकारिता पर सेमिनार आयोजित हुआ।

सेमिनार के प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए भारतीय उच्चायोग के हिंदी एवं संस्कृति अधिकारी श्री आनंद कुमार ने कहा कि यू.के. से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं को आर्थिक सहयोग देने के लिए भारतीय उच्चायोग विचार कर रहा है।

पत्रकार एवं कवयित्री सुश्री शिखा वार्ष्णेय ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर अपने पर्चे में अनुभूति-अभिव्यक्ति वेब साइट का उल्लेख करते हुए कहा कि आज बी.बी.सी. हिंदी, तहलका, जनतंत्र, वेबदुनिया जैसी वेबसाइट्स न केवल हिंदी भाषा में सामग्री प्रस्तुत करके हिंदी की उन्नति के लिए काम कर रही हैं, बल्कि आज हिंदुस्तान में ही नहीं, पूरी दुनिया में इन पोर्टलों पर अब तक कि सबसे सफल वैचारिक क्रांति की नींव भी रख रही हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज के आपाधापी युग में रफ़्तार का भी बहुत महत्व है और वेब पत्रिकाएँ उस पैमाने पर खरी उतरती हैं। वो पाठकों तक हर जानकारी उस जगह और उस वक्त उपलब्ध कराती हैं जिस जगह और जिस वक्त वे चाहते हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम्' के नारे को वेब पत्रकारिता ने चरितार्थ कर दिया है।

यू.के. के वरिष्ठ पत्रकार और लेखक श्री नरेश भारतीय स्वयं उपस्थित न हो सके परंतु उन्होंने अपना आलेख भेजा जिसे श्री जनार्दन अग्रवाल ने प्रस्तुत किया। अपने आलेख में श्री भारतीय ने करीब साढ़े चार दशक पूर्व 1967 में प्रकाशित ब्रिटेन की पहली हिंदी पत्रिका 'चेतन' के प्रकाशन के दौरान अपने अनुभवों को बताते हुए कहा कि पत्रकारिता का संबंध रिपोर्ताज़ और राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर चर्चा और बहस से होता है। आज पत्रकारिता की परिधि में मुद्रण के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को भी शामिल किया जाता है। रेडियो, टेलीविजन और अब इंटरनेट इसमें शामिल हैं। इससे पत्रकारिता की परिभाषा नहीं बदलती। मात्र स्वरूप और प्रस्तुति का माध्यम बदलते हैं। रेडियो और टेलीविजन में भी तो पत्रकार ही काम करते हैं, लिखते हैं और बोलते भी हैं।

'पुरवाई' के संपादक श्री पद्मेश गुप्त ने 'पुरवाई' के पिछले 13 सालों की उपलब्धियों और कार्यों का उल्लेख करते हुए अत्यंत रोचक पॉवर पॉईंट प्रेज़ेंटेशन और चित्रों के माध्यम से कहा "पुरवाई पत्रिका एक अंतर्राष्ट्रीय अभियान है। अभियान नए रचनाकारों के मंच का, अभियान प्रवासी भावनाओं की अभिव्यक्ति का और अभियान विश्व के हिंदी लेखकों को जोड़ने का। मैं यह भी स्पष्ट करता चलूँ कि 'पुरवाई' मूल रूप से साहित्यिक पत्रिका नहीं है। यह भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है, नए रचनाकारों को प्रोत्साहित करने का माध्यम है, स्थापित लेखकों के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन का माध्यम है और प्रवासी इशूस को सामने लाने का माध्यम है।"

इस अवसर पर यू.के. से प्रकाशित प्रवासिनी पत्रिका, अमरदीप, मिलाप, नवीन वीकली और जगतवाणी जैसे अखबारों का भी उल्लेख हुआ। सत्र के अंत में आज इंटरनेट की वेब पत्रिकाओं की विश्वसनीयता और मौलिकता पर खड़े सवालों पर भी चर्चा हुई।

सेमिनार के दूसरे सत्र में बी.बी.सी. रेडियो के वरिष्ठ सदस्य एवं पूर्व प्रसारक श्री यावर अब्बास ने कहा कि बी.बी.सी. विश्व सेवा का दुनिया में खबरों को पहुंचाने का ऐतिहासिक योगदान रहा है परंतु राजनैतिक कारणों से आज वह खतरे में है।

इस सत्र का संचालन करते हुए लंदन के लेखक एवं पत्रकार श्री तेजेंद्र शर्मा ने बी.बी.सी. विश्व हिंदी पर आरोप लगाया कि वे भारत को भारत की खबरें बताते हैं परंतु यू.के. की खबरों का प्रसारन नहीं करते।

बी.बी.सी. हिंदी सेवा लंदन के पूर्व प्रसारक श्री विजय राणा ने तेजेंद्र जी के आरोपों पर सफ़ाई देते हुए कहा कि तेजेंद्र जी उस समय की बात कर रहे हैं जब बी.बी.सी. हिंदी सेवा अपने उतार की ओर थी। बी.बी.सी. हिंदी सेवा पर पूर्व में संगम, संपादक के नाम पत्र जैसे अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण होता रहा है जिसमें यू.के. की संस्थाओं और विभूतियों से संबंधित समाचार भारत में प्रसारित होते रहे हैं। उन्होंने बी.बी.सी. हिंदी सेवा के योगदानों की पावर पॉईंट प्रेज़ेंटेशन द्वारा प्रस्तुति की। उन्होंने कहा कि बी.बी.सी. की हिंदी सेवा ने भारत के गांव-गांव में दुनिया की खबरें पहुंचाई है। विजय जी ने बी.बी.सी. विश्व सेवा को अत्यंत निष्पक्ष बताया।

बी.बी.सी. हिंदी सेवा के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाश बुधवार ने अपने लंबे कार्यकाल के अनुभवों को बाँटते हुए कहा कि पत्रकार प्रसारक होते हैं और उनका काम होता है कि वे समाज के आईने को निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करें। पत्रकारों का काम समाज को बदलना नहीं अपितु उसे सच का आईना दिखाना है।

यू.के. के सनराईज़ रेडियो के प्रख्यात प्रसारक श्री रवि शर्मा ने सनराईज़ रेडियो को एक व्यवसायिक रेडियो बताया। उन्होंने कहा कि सनराईज़ रेडियो मूलतः एंटरटेन्मेंट के लिए है परंतु अन्य समाचार एजेंसियों के साथ यह रेडियो समाचार भी प्रसारित करता है।

कार्यक्रम में नेहरू केंद्र लंदन की प्रोग्राम डाइरेक्टर श्रीमती दिव्या माथुर, हिंदी समिति के प्रबंधक श्री के.बी.एल.सक्सेना, डॉ. पियूश गोयल, एम.पी.मीडिया सर्विसेज़ के श्री मानजी पटेल, लेखक श्री इसमाईल चुनारा, सुश्री सुरेखा चोफला सहित लंदन के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। ••

हिंदी भाषा जनपदीय स्तर से ऊपर उठकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक प्रयुक्त होती है। शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार के साथ कई नए व्यवहार-क्षेत्र भी विकसित हो रहे हैं जिनमें हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। आज यह प्रशासन, विधि, व्यापार-वाणिज्य, बैंक, विज्ञान, कंप्यूटर आदि विभिन्न तकनीकी क्षेत्रों में पदार्पण कर क्षेत्र-विशेष या विषय-विशेष के आर्थिक विकास में सार्थक भूमिका निभा रही है। हिंदी का यह व्यावहारिक रूप ही इसकी शक्ति बन गया है।

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी

मैं कुम्हार ही हूँ, दर्जी नही

उदय प्रकाश

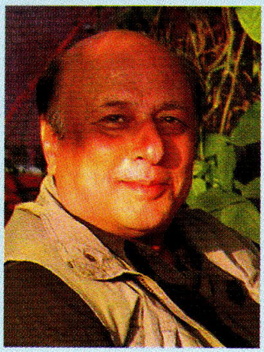

पाठकों के चहेते कथाकार उदय प्रकाश का नाम साहित्य में जाना-पहचाना है। पिछले दो दशकों में प्रकाशित उदय प्रकाश की कहानियों मे कथा साहित्य के परंपरागत पाठ को अपने आख्यान और कल्पनात्मक विन्यास से पूरी तरह बदल दिया है। नए युग के यथार्थ के निर्माण में उदय की कहानियों की ज़बर्दस्त भूमिका है। वैविध्यपूर्ण जीवनानुभवों से लैस उदय की कहानियों पर कदाचित जितनी असहमतियाँ और विवाद दर्ज किए गए उतनी किसी और की कहानियों पर नहीं। किंतु सभी असहमतियों और विवादों को पीछे छोड़ते हुए उदय प्रकाश ने पश्चिमी मापदंड पर टिकी हिंदी आलोचना की जड़ीभूत कसौटियों के सामने सदैव एक चुनौती खड़ी की है।

मध्यप्रदेश के शहडोल जिले में 1952 में जन्मे उदय प्रकाश शुरुआती कई नौकरियों के बाद लंबे अरसे से लेखन की स्वायत्तशासी दुनिया से जुड़े हैं। सुनो कारीगर, अबूतर कबूतर, रात में हारमोनियम व एक भाषा हुआ करती है - कविता संग्रहों और तिरिछ, दरियाई घोड़ा और अंत में प्रार्थना, पालगोमरा का स्कूटर, दत्तात्रेय के दुख, पीली छतरी वाली लड़की, मैंगोसिल व मोहनदास जैसे कहानी संग्रहों के लेखक उदय प्रकाश ने कई लेखकों पर फ़िल्में बनाई हैं और बिज्जी की कहानियों पर धारावाहिक भी। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलने पर बधाई देने के निमित्त हुई बातचीत के कुछ अंश -

देश-विदेश के कई पुरस्कारों-सम्मानों के बाद अब साहित्य अकादमी पुरस्कार भी आपके खाते में हैं, क्या इस निर्णय को देर आयद दुरुस्त आयद माना जाना चाहिए ?

देखिए ओम जी, देर से दिया गया न्याय होता नहीं है। इस प्रक्रिया को केवल पुरस्कारों तक ही सीमित करके न देखें। इसमें मूल्यांकन की हमारी पूरी कार्यपद्धति और मानसिकता शामिल है। जब तक निष्पक्ष मूल्यांकन का मज़बूत आधार किसी रचना या कृति की आलोचना के पीछे नहीं होता, उसकी शक्ति का सही आकलन नहीं होता। दुर्भाग्य से हमारे यहाँ यही होता रहा है। इसलिए अभी भी सांस्थानिक निर्णयों और उनके न्यायिक विवेक को लेकर मैं संशय में रहता हूँ। हालांकि मुझे खुशी हुई है, क्योंकि यह एक सांस्थानिक स्वीकृति है - हमारे देश की सर्वोच्च साहित्यिक संस्था का यह सम्मान है।

मोहनदास कहानी, जिस पर अकादमी पुरस्कार दिए जाने की घोषणा हुई है, के ज़रिए आपका कथाकार क्या कहना चाहता है ?

मोहनदास कहानी आज़ादी के लगभग साठ साल बाद के हालात का आकलन करती है। यह उस अंतिम व्यक्ति की कहानी है जो बार-बार याद दिलाता है कि सत्ताकेंद्रित व्यवस्था में एक निर्बल, सत्ताहीन और ग़रीब मनुष्य की अस्मिता तक उससे छीनी जा सकती है। पर यह कहानी प्रतिकार की, प्रतिरोध की कहानी नहीं है। ओम जी, इस कहानी को उत्तर आधुनिक कहानी के रूप में भी देखा और सराहा गया है। वर्तिका फ़िल्म्स के लिए मजहर कामरान ने इस पर फ़िल्म बनाई है, जिसकी पटकथा, संवाद आदि मैंने लिखे हैं। हालांकि फ़िल्म उस संवेदना को तो नहीं छू पाती, जिसे लक्ष्य कर कहानी लिखी गई थी, लेकिन कहानी आज के हालात में एक मनुष्य की नियति का आख्यान तो रचती ही है।

कहाँ तो कहानी संग्रहों पर कदाचित ही साहित्य अकादमी की नज़रें-इनायत रही, कहाँ एकमात्र कहानी पर अकादमी पुरस्कार। निर्णायकों के इस निर्णय को लेकर एक कहानी लेखक के रूप में आप क्या सोचते हैं ?

कहानी एक कठिन विधा है, भले ही उपन्यास से आकार में यह छोटी होती है और कविता की तुलना में यह गद्य का आश्रय लेती है। फिर भी कविता और उपन्यास के बीच की यह विधा बहुत आसान नहीं है। और देखिए, कहानी को सम्मान कभी मिला ही नहीं। शायद यह एक पुनर्विचार है हमारे समय के विद्वानों का जिन्होंने कहानी को वह प्रतिष्ठा दी है जिसकी वह हकदार रही है। चेखव ने तो कहानियाँ ही लिखीं, उपन्यास नहीं लिखे। प्रेमचंद अपनी कहानियों से ही लोकमान्य में जाने गए, गोदान आदि उपन्यासों से नहीं। निर्मल वर्मा की पहचान भी प्राथमिक तौर पर कहानी से ही बनी। तो इस समय के परिदृश्य के केंद्र में कहानी है।

जब आपकी किस्सागोई और कला युक्तियों को समझने में आलोचक तक गच्चा खा जाते हैं, कहानी के सामान्य पाठकों तक आपकी कहानियाँ किस सीमा तक पहुँची हैं ?

ऐसा नहीं आज आलोचना असफल हुई है। हिंदी का अभिजन यानी इलीट वर्ग कहानी के निहितार्थ में नहीं जाता, वह युक्तियों के बारे में बात करता है। चंद्रकांता संतति की लोकप्रियता की क्या वजह है। कोई आलोचना आप उस पर दिखा सकते हैं जिससे प्रेरित होकर पाठकों ने उसे पढ़ा हो। इस आख्यान की भी आख़िर अपनी कलायुक्तियाँ हैं जिनका जादू पाठक पर असर करता है। हम देशी विदेशी आलोचकों पर नज़र डालें तो पाते हैं, उनका अध्ययन बहुत व्यापक था। जार्ज लुकाच की तैयारियों को देखें। अन्य समकालीन आलोचकों को देखें। वे बड़ी तैयारियों के साथ साहित्य के मूल्यांकन में उतरते हैं। आलोचना का मक़सद मूल्यों को संधान करना है। यह बड़ी साधना का काम है। भारत देश की संस्कृति-सभ्यता में एक से एक बड़े कथाकार मौजूद हैं। पर हिंदी के बौद्धिक वर्ग के पास उस तैयारी का अभाव है जो किसी भी रचना के मूल्यांकन में प्रवृत्त होने की प्राथमिक योग्यता है।

यों तो आप कविता और कहानियाँ दोनों लिखते हैं। फिर भी एक लेखक के रूप में आपकी प्राथमिकता क्या है, कविता या कहानी ?

ओम जी, मैं पहले भी कह चुका हूँ कि मैं मूलतः कवि ही हूँ। इसको मैं भी जानता हूँ और बाक़ी लोग भी जानते हैं। मैं तो अक्सर मज़ाक में कहा कहता हूँ कि मैं एक ऐसा कुम्हार हूँ जिसने धोखे से कभी एक कमीज़ सिल दी और अब उसे सब दर्जी कह रहे हैं। सच यह है कि मैं कुम्हार ही हूँ।••

ओम निश्चल
जागरण से साभार

स्पंदन सम्मान समारोह संपन्न

भोपाल, ललित कलाओं के लिए समर्पित संस्था 'स्पंदन' द्वारा स्थापित पुरस्कारों के लिए 'स्पंदन सम्मान समारोह' का आयोजन दिनांक 12-13 दिसंबर 2010 को भोपाल में किया गया। बारह दिसंबर को भारत भवन में आयोजित 'स्पंदन सम्मान समारोह' की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। इस भव्य और गरिमामय समारोह में 'स्पंदन कथा शिखर सम्मान (निरन्तर सृजनशील वरिष्ठ साहित्यकार के लिए) हिन्दी के सुविख्यात कथाकार कवि श्री विनोद कुमार शुक्ल को (पुरस्कार स्वरूप इकतीस हज़ार रुपये, शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह)' 'स्पंदन सृजनात्मक साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार' श्री अजेय कुमार को, 'स्पंदन कृति पुरस्कार' डॉ. अनामिका को (उपन्यास 'दस द्वारे का पिंजरा' के लिए) 'स्पंदन कृति पुरस्कार' डॉ. बद्री नारायण को (कविता संग्रह खुदाई में हिंसा के लिए) 'स्पंदन आलोचना पुरस्कार' डॉ. रोहिणी अग्रवाल को (आलोचना कर्म के लिए) 'स्पंदन चित्रकला' पुरस्कार मनीष पुष्कले को (चित्रकर्म के लिए) प्रत्येक को ग्यारह हज़ार रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह श्री विश्वनाथ तिवारी द्वारा प्रदान किए गए।

13 दिसंबर 2010 को स्वराज भवन में सम्मानित रचनाकारों द्वारा 'रचना पाठ' किया गया जिसमें विनोद कुमार शुक्ल ने अपनी शीर्षकविहीन कविताओं का पाठ किया। आदिवासी जीवन का चित्र अंकित करती कविताओं ने श्रोताओं को अभिभूत कर दिया। डॉ. बद्रीनारायण ने समर्पण, इस बार, मछली, समुद्र गाथा, कौतुक कथा सहित अनेक कविताएँ सुनाई। उन्होंने कहा कि भोपाल में कविता सुनाना उन्हें हमेशा ही चुनौतीपूर्ण लगता है। डॉ. अनामिका ने पुरस्कृत उपन्यास 'दस द्वारे का पिंजरा' के कुछ अंशों का, श्री अजेय कुमार ने 'जनसत्ता में प्रकाशित' कुछ आपबीतियाँ (तीन) डॉ. रोहिणी अग्रवाल ने संस्मरणात्मक कहानी का पाठ किया।

इस अवसर पर युवा चित्रकार गायत्री गौड़ ने सम्मानित रचनाकारों की कृतियों पर केंद्रित पेंटिंग्स रचनाकारों को भेंट की। इस सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार गोविंद मिश्र ने की। इस दो दिवसीय आयोजन का सफल एवं सुंदर संचालन डॉ. आनंद कुमार सिंह ने किया।••

प्रस्तुति
उर्मिला शिरीष

मॉरीशस से प्रकाशित 'विश्व हिंदी समाचार' का नया अंक

पत्रिका : विश्व हिंदी समाचार, अंक : सितंबर, 2010, स्वरूप : त्रैमासिक, संपादक : डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

विश्व हिंदी समाचार

मॉरीशस में हिंदी दिवस समारोह

विश्वप्रसिद्ध समाचार पत्रिका 'विश्व हिंदी समाचार' के समीक्षित अंक में जानकारीपरक व ज्ञानवर्धक समाचारों को स्थान दिया गया है । अंक के मुखपृष्ठ पर मॉरीशस में हिंदी दिवस के आयोजन का समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है । हिंदी दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम में महामहिम श्री मधुसूदन गणपति ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए । उन्होंने कहा, 'हिंदी भारत में तथा भारत के बाहर भारतवंशियों को एकता और स्नेह के सूत्र में बाँधती है ।' मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री ने कहा कि कुछ ही समय में हिंदी दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन जाएगी । इस अवसर पर मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय श्री वसंत कुमार बनवारी ने स्पष्ट किया, ' हिंदी बहुत तेज़ी से वैश्विक भाषा का रूप ले रही है ।' इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक श्रीमती अनीता अरोड़ा ने अतिथियों की सहभागिता के लिए आभार व्यक्त किया । एक अन्य समाचार के अनुसार, लंदन में हिंदी पुस्तकों का लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गाया । यह लोकार्पण कैलाश बुधवार एवं डॉ. अरूणा अजीतसरिया द्वारा किया गया । भारत नार्वे लेखक सेमिनार का समाचार अच्छा व रूचिकर है । इससे नार्वे में हिंदी के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की झलक मिलती है । लंदन में आयोजित सम्मान समारोह में बिहार (भारत) के रंगकर्मी व नाटककार हृषिकेश सुलभ को वर्ष 2010 का 'अंतर्राष्ट्रीय इंदु वर्मा कथा सम्मान' से सम्मानित किया गया है । इस कार्यक्रम में महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति व वरिष्ठ साहित्यकार श्री विभूति नारायण राय ने स्पष्ट किया कि विश्वविद्यालय विदेशों की हिंदी से संबंधित संस्थाओं के मध्य समन्वय का कार्य करेगा । लंदन के नेहरू केंद्र में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वातायन कविता सम्मान 2010 तथा ख्यात कथाकार चित्रा मुद्‌गल को मिले दो प्रमुख पुरस्कारों को समाचार पत्रिका ने प्रमुखता से प्रकाशित किया है । अंक में राजस्थान प्रगतिशील लेखक मंच तथा जवाहर कला केंद्र की पहल पर जयपुर में आयोजित कार्यक्रम का समाचार विस्तृत रूप से प्रकाशित किया गया है । पत्रिका ने इसे कार्यक्रम की रपट के रूप में बहुत सुंदर ढंग से प्रकाशित किया है । 31 जुलाई व 1 अगस्त 2010 को प्रेमचंद जयंती के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में ख्यात कवि नंद भारद्वाज, जितेंद्र भाटिया, आदिल रजा मंसूरी, सीमा विजय, दिनेश चारण ने सक्रिय रूप से भाग लिया । इस अवसर पर अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ लेखक व कवि श्री नंद भारद्वाज ने कहा, 'आज पढ़ी गई कहानियों से राजस्थान की समकालीन रचनाशीलता का पता चलता है ।' नई दिल्ली स्थित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में 'मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार' श्री मानिक वछावत द्वारा रचित 'इस शहर के लोग' को दिया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रत्नाकर पांडेय ने की । प्रो. शिवकुमार मिश्र ने एक कार्यक्रम के दौरान स्पष्ट किया है कि मनुष्यता के लिए साहित्य से जुड़ा रहना होगा । यह समाचार विचारणीय जानकारी प्रदान करता है । इसके अतिरिक्त मॉरीशस में अनुवाद पर कार्यशाला, अब 'अ' से 'अनार' पढ़ेंगे अमरीकी तथा पोर्टब्लेयर में प्रेमचंद जयंती के समाचार पत्रिका में आकर्षक ढंग से विस्तार के साथ प्रकाशित किए गए हैं । पत्रिका के संपादक डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र का संपादकीय हिंदी दिवस की धूम के मध्य पाठकों से कुछ अपेक्षा करता है । उनके अनुसार, ' हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की 7वीं आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी विश्वव्यापी संस्थाएँ अपने अभियान को और तेज़ करे । जिससे संयुक्त राष्ट्र संघ के ज़्यादा से ज़्यादा सदस्य देशों का समर्थन प्राप्त करना सहज हो सकेगा ।' ••

अखिलेश शुक्ल द्वारा संपादित

आदरणीय भाई डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र जी,
सादर नमन।

'विश्व हिंदी समाचार' का सितंबर अंक हस्तगत हुआ। धन्यवाद। इस अंक में मॉरीशस में आयोजित हिंदी दिवस समारोह से लेकर विभिन्न देशों में हो रही गतिविधियों की जानकारी दी गई है। नार्वे का लेखक सेमिनार, लंदन में पुस्तकों का लोकार्पण आदि हिंदी में हो रही देश-विदेश की सचित्र जानकारी देती है। साथ ही चित्रा मुद्‌गल के चिन्नप्प भारती व उदयराज सिंह सम्मान, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती पुरस्कार समारोह, अंतर्राष्ट्रीय वातायन कविता सम्मान की रिपोर्टें भी हिंदी लेखकों को प्रोत्साहित करेंगी। प्रेमचंद पर आयोजित राजस्थान और पोर्ट ब्लेयर में जयंति समारोह उस साहित्यकार के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं जिसने हिंदी और उर्दू की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दिया।

दिवंगत हिंदी सेवी स्वर्गीय मधुकर राव चौधरी और स्वर्गीय शिवकांत तिवारी को हमारी श्रद्धासुमनांजली।

तीन वर्षों की सफ़ल यात्रा के लिए 'विश्व हिंदी समाचार' की पूरी टीम को बधाई।

चंद्र मौलेश्वर
1-8-28, यशवंत भवन
अलवाल, सिकंदराबाद
500 010 (आंध्र प्रदेश

पुस्तक समीक्षा

समरसता के आह्वान का उपन्यास – विश्वामित्र

ज्योतिष जोशी

हाल के वर्षों में विशेषकर हिंदी में मिथकीय और पौराणिक चरित्रों को लेकर उपन्यास लिखने की प्रवृत्ति बढ़ी है । लेकिन अधिकतर उपन्यासकारों ने चरित्रों के आख्यानों का उल्था ही किया है, कोई नवीन उद्‌भावना जैसी चीज़ नहीं दिखती । इस प्रसंग में भगवान सिंह का उपन्यास 'अपने-अपने राम' उल्लेखनीय है जो नई उद्‌भावनाओं के साथ रामकथा की विभिन्न सरणियों की खोज का उपक्रम था । इसी श्रृंखला में ब्रजेश के. वर्मन का नया उपन्यास आया है - 'विश्वामित्र ' ।

'विश्वामित्र ' को आधार बनाकर लिखा गया यह उपन्यास उनके चारित्रिक वैशिष्ट्य के साथ-साथ उनकी समरसता का दिग्दर्शन भी है । वाल्मीकी और तुलसीदास द्वारा लिखित रामकथाओं में महर्षि विश्वामित्र की बहुत संक्षिप्त भूमिका है । उपन्यासकार ने मुख्यसूत्र को यहीं से ग्रहण किया है, पर पूरे उपन्यास को बुनने में उसने पुराणों, उपनिषदों और पारंपरिक शास्त्रीय ग्रंथों का गहरा अनुशीलन कर विश्वामित्र को एक ऐसे समग्र चरित्र के रूप में उभारा है जिसमें हम सहजता से भारतीय गणतंत्र का अधिनायकत्व देख सकते हैं । उपन्यास में अंकित विश्वामित्र क्षत्रिय होते हुए न केवल अपनी कठोर साधना से ब्रह्मर्षि बनते हैं, वरन् वे भारत को समरस समाज, समदर्शी न्याय-व्यवस्था और सर्वजन हितकारी गणतंत्र के रूप में देखना चाहते हैं । यह ध्यान देने की बात है कि इस उपन्यास के विश्वामित्र की समूची साधना और निष्काम तपोबल का महान लक्ष्य है -- आर्यावर्त से आसुरी शक्तियों और वृत्तियों का संहार । उपन्यास में कथा का सिर्फ सूत्र भर है - विश्वामित्र के आश्रम में दीक्षा से लेकर सीता स्वयंवर तक की कथा । पर इसमें उपन्यासकार ने पूर्वदीप्ति के सहारे दूसरे अनेक प्रसंगों को लाकर उसे नई उद्‌भावना से समन्वित कर अर्थपूर्ण बना दिया है ।

पाठक देखेंगे कि उपन्यास में गौतम अपराधबोध से ग्रसित होते हैं तो अहल्या के प्रायश्चित से एक नई स्त्रीवादी बहस शुरू हो जाती है । परशुराम भारत की चिंता करते अपनी पूर्वछवि से बाहर निकलते हैं तो इंद्र की लोलुपता के दूसरे कई रूप यहाँ दिख पड़ते हैं । मेनका के सौंदर्य और विश्वामित्र से उसके संवाद में भी ऐसे विचलित करने वाले प्रश्न हैं जो परेशान करते हैं । अहल्या, इंद्र और शची का त्रिकोण भी उपन्यास का एक ऐसा पक्ष है जो वासना, दायित्व और प्रेम की नई व्याख्या करता है । अपने विन्यास में यह उपन्यास भारतीय स्वराज की नई व्याख्या और उसकी माँग भी है । विश्वामित्र को लोक-नायक के रूप में खड़ाकर उपन्यासकार ने जिस प्रतिबद्ध चिंतन, दर्शन और विमर्श को रखा है उसमें हम आसानी से इक्कीसवीं शताब्दी में भारतीय जन की आकांक्षा की अभिव्यक्ति के साथ-साथ उसकी पीड़ा को भी जान सकते हैं ।

प्रसिद्ध युगोस्लावियाई उपन्यासकार इवो आंद्रिच ने विचारधारा को 'मोमदीप की लौ ' कहा है और चाहा है कि उपन्यास में विचारधारा की वैसी ही भूमिका होनी चाहिए, वैसा यहाँ हम आसानी से देख पाते हैं । पूरी कृति में लेखक का हस्तक्षेप नहीं है । कृति का झीना कथानक चरित्रों के संघर्ष से आगे बढ़ता है। उपन्यास 'घटना' में नहीं बल्कि उस 'तनाव' में रूपायित होता है जो चरित्रों के संघर्षों में हम आसानी से देखते हैं । लेखकीय रचनात्मकता का एक स्तर उपन्यास के 'फॉर्म' में भी दिखता है । इस 'फॉर्म' में भारतीय विवेक की समझ और अपने सांस्कृतिक दर्प का ओज भी है जिसके कारण ब्रजेश अधोगति की ओर बढ़ रही भारतीय व्यवस्था को लक्ष्य कर पाते हैं ।

उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उसकी 'समकालीनता' है, पर यह वैसी 'समकालीनता' नहीं है जो अतीत और भविष्य को भुलाकर निपट वर्तमान की तात्कालिकता में खो जाए । इसमें अतीत का रचनात्मक ओज है और भविष्य की बेतरह चिंता भी, यही कारण है कि यह 'समकालीनता' वर्तमान के संक्रमण को भेदती है और उस पर एक सार्वजनिक बहस भी प्रस्तावित करती है । असल बात है, औपन्यासिक ढांचे के भीतर पराभूत भारतीय जन की यातना और निरंतर उसका दोहन । राज्य-व्यवस्था अभिजात्य सामाज के साथ है, हर तरफ़ अफरा-तफरी है, लूट, भूख, अनीति, अधर्म है - और ऐसे में 'विश्वामित्र ' लोकनायक की तरह उठ खड़े होते हैं । यह एक लेखक द्वारा दिया गया विकल्प है (और कदाचित नई राजनीति का प्रकल्प भी) ।

उपन्यास की भाषा, शिल्प, चरित्र, संवाद और उसमें व्यक्त समय-सबको देखते हुए यह नि:संकोच कहा जा सकता है कि यह उपन्यास अपनी एक खास जगह बनाता है । अतीत को समकालीन आकांक्षाओं में विन्यस्त कर उपन्यासकार ने उसमें जैसी रचनात्मकता संभव की है, वह इस उपन्यास का वैशिष्ट्य और इसकी सर्जमात्मक उपलब्धि भी है । लेखक हिंदी के समर्थ आलोचक हैं । ••

स्वामी विवेकानंद पर अनूठी कृति

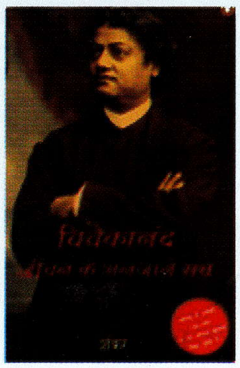

निरंतर अनुसंधान के बावजूद विवेकानंद के संपूर्ण व्यक्तित्व को अभी आंका नहीं जा सका है। इसलिए विवेकानंद के जीवन के अज्ञात और अनसुलझे पहलुओं की खोज भी चल रही है... चलती रहेगी।

एक व्यक्ति के रूप में कैसे थे विवेकानंद? संयासी के कर्तव्य में समन्वय की कोशिश में क्या वे असंभव को संभव कर पाए? उनकी बहन ने क्या आत्महत्या की थी? विलायत से वापस लौटते हुए, रास्ते में वीतरागी मँझले भाई ने आख़िर इतना मान क्यों ठान लिया कि पांच वर्षों तक घरवालों को एक भी पत्र नहीं लिखा? दत्त परिवार की हिस्सेदारी के मामले के लिए रुपए-पैसे आख़िर कहाँ से जुटाए गए? समूचा परिवार निर्धन कैसे हो गया ?

संयासी विवेकानंद विदेश में आख़िर कैसे वेदांत और बिरयानी व्यंजन के प्रचार-अभियान में उतर पड़े? विश्व-विजय करके लौटने के बाद भी कलकत्ता के नामी-गिनामी डॉक्टरों ने फ़ीस के तौर पर भिक्षुक संन्यासी से बेहिचक कितने रूपए लिए थे? इलाज का खर्च वहन करने में हैरान-परेशान होकर स्वामी जी को किन-किन लोगों के सामने हाथ फैलाना पड़ा? इसी तरह के हज़ारों छोटे-छोटे सवालों और बड़े-बड़े जवाबों को इकट्ठा करके शंकर ने बहुत रोचक ढंग से 'विवेकानंद : जीवन के अनजाने सच' को रचा है।

शंकर (मणि शंकर मुखर्जी) वर्तमान समय में बांग्ला के सबसे ज़्यादा पढ़े जानेवाले उपन्यासकारों में से एक हैं। बांग्ला भाषा में लिखी 'चौरंगी' अब तक की आपकी सबसे सफ़ल पुस्तक है, जिसका हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, साथ ही 1968 में इस पर बांग्ला में फ़िल्म भी बन चुकी है। आपने कई सफ़ल कथेतर कृतियों की रचना भी की है। 'सीमाबद्ध' और 'जनअरण्य' आपके ऐसे दो उपन्यास हैं, जिन पर सत्यजित रे ने फ़िल्में बनाई हैं। फ़िलहाल आप कोलकाता में निवास करते हैं।

अनुवादक सुशील गुप्ता अब तक लगभग 130 बांग्ला रचनाओं का हिंदी में अनुवाद कर चुकी हैं। आपके कई कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आपने प्रोफ़ेसर भारती राय की आत्मकथा 'ये दिन, वे दिन' का भी मूल बांग्ला से अनुवाद किया है। यह किताब पेंगुइन-यात्रा से हाल ही में प्रकाशित हो चुकी है। ••

वेणीमाधव रामखेलावन को श्रद्धांजलि

" थोड़ी सी मीठी है
ज़रा सी मिर्ची है,
सौ ग्राम ज़िन्दगी ये
सम्भाल के खर्ची है "

विभु पुरि (2010)

इक्यासी वर्षों की अथक यात्रा को तय करने के पश्चात, हिंदी सेना का एक कर्मशील, निष्ठावान सिपाही अचानक ईश्वर को प्यारा हो गया। वे हिंदी साहित्य को अपने कुछ अमूल्य रत्न, 'हिंदी प्रविशिका' (1970, 2004), 'ज्ञान ज्योति' (1972), 'अमर प्रेम' (1985), 'सोम दत्ता' (1995), 'निछावर' (2005), 'दीवार ढह गई' (2006), जैसे उपन्यास, हिंदी के प्रति अपने समर्पण के किस्से के रूप में छोड़ गए हैं। चर्चा, मॉरीशस के वरिष्ठ रचनाकार, कभी-कभी थोड़े उपेक्षित, स्वर्गीय वेणीमाधव रामखेलावन की हो रही है, जिनका, 24 नवंबर 2010 को स्वर्गवास हो गया।

1929 में एक मध्यवर्गीय परिवार में जन्मे, वेणीमाधव जी, शिक्षा के प्रति बड़े ही आकर्षित थे। इसका प्रमाण यह है कि वे बिना अपने माता-पिता की सहायता से, स्वयं पढ़-लिखकर एक साधारण मज़दूर से प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक, फिर वरिष्ठ अध्यापक, बाद में उप-मुख्य अध्यापक और अंत में प्राथमिक स्कूल इन्सपेक्टर के पद प्राप्त कर नौकरी से सेवामुक्त हुए। परंतु वे अंतिम साँस तक कर्मठ रहे। अन्य संस्थानों, जैसे आर्य-सभा, महात्मा गांधी संस्थान आदि से जुड़कर समाज को कुछ प्रदान करते रहे।

उपर्युक्त पंक्तियों से यह जोड़ना आवश्यक है कि अपनी जीवन-यात्रा के संघर्ष की कथा, वे कल्पना के रस में पिरोकर उपन्यास के रूप में परिवर्तित करते थे। 'दीवार ढह गई' के मुख्य पात्र आनन्द की जीवन-यात्रा तथा संघर्ष-यात्रा से रामखेलावन जी के जीवन की तुलना करें तो वे लगभग एक से दिखते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वे एक यथार्थवादी लेखक थे। उनके कथा-सागर में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन के सत्य का ही चित्रण है।

कथाकार के साथ-साथ, रामखेलावन जी कवि भी थे। उनका अलग से कोई कविता संकलन तो नहीं है, किंतु उन्होंने अपनी कविताओं को गीतों के रूप में, अपने उपन्यासों में ही स्थान दिया है। सुर, ताल, राग, मात्रा आदि संगीत की बारीकियों के भी वे ज्ञानी थे। वे अपने, स्वयं से प्रेरित, पुत्र के संगीत को वाणी दिया करते थे।

रामखेलावन जी आलोचक भी थे। धर्म, दर्शन आदि विषयों को लेकर वे समाचार पत्रों में आलोचनाएँ लिखते थे। ये आलोचनाएँ 'आक्रोश', 'आर्योदय', 'ले माचिनाल', 'लेक्सप्रेस' आदि स्थानीय समाचार पत्रों में हिंदी तथा अंग्रेज़ी में प्रकाशित होती थीं।

आज उनका निधन भले ही हो गया है, फिर भी उनकी लेखन यात्रा अभी तक जीवित है। हाल ही में आर्योदय में 'कर्मफल' शीर्षक से उनका एक लेख प्रकाशित हुआ है। उनका एक हिंदी बाल कहानी संकलन जिसका उन्होंने स्वयं ही अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है, प्रकाशित होने की राह में है।

दराज़ में पड़ी रामखेलावन जी की उन रचनाओं का साक्षात्कार करने की इस आशा के साथ, इन सर्व-गुण संपन्न लेखक को हम श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। ••

नेकितसिंह अरविंदसिंह

कन्हैयालाल नंदन को श्रद्धांजलि

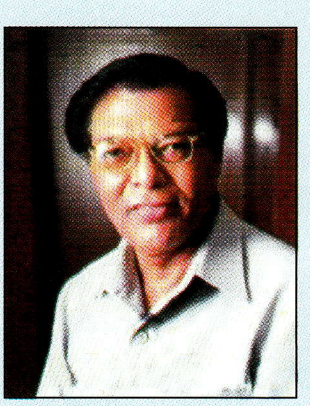

दिनांक 25 सितम्बर 2010 को प्रसिद्ध साहित्यकार पत्रकार कन्हैयालाल नंदन के निधन के बाद देश में कई जगह उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित की गई व शोक सभाओं के आयोजन हुए । 'परिचय साहित्य परिषद' ने भी 27 सितम्बर 2010 को दिल्ली के फीरोज़शाह रोड स्थित 'रशियन कल्चरल सेण्टर' में एक शोक सभा आयोजित की ।

इस शोकसभा में पूर्व सांसद व विख्यात साहित्यकार उदय प्रताप सिंह, प्रसिद्ध कविगण डॉ.शेरजंग गर्ग, लक्ष्मी शंकर बाजपेयी व परिचय साहित्य परिषद अध्यक्ष उर्मिल सत्यभूषण मंच पर थे । लेखक प्रेमचंद सहजवाला ने कन्हैयालाल नंदन के साथ अपने संक्षिप्त संस्मरण बतौर श्रद्धांजलि प्रस्तुत किये । कवयित्री अर्चना त्रिपाठी ने कन्हैयालाल नंदन की एक कविता प्रस्तुत की । श्री लक्ष्मीशंकर बाजपेयी ने कहा कि कन्हैयालाल नंदन ने असंख्य लेखकों, कवियों को प्रोत्साहन दिया । उन्होंने नंदन जी द्वारा सन् 2007 में न्यूयार्क में हुए 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में प्रस्तुत एक गज़ल के कुछ शेर कहे:

नदी की कहानी कभी फिर सुनाना
मैं प्यासा हूं दो घूंट पानी पिलाना
मुझे वो मिलेगा ये मुझ को यकीं है
बहुत जानलेवा है ये दरम्याना
मुहब्बत का अंजाम हरदम यही था
भंवर देखना कूदना डूब जाना

डॉ. शेजंग गर्ग ने कहा कि नंदन जी पिछले लगभग आठ वर्ष से मौत से जूझ रहे थे पर फिर भी उन्होंने अपनी कर्मठता व जीवंतता बरकरार रखी । उर्मिल सत्यभूषण को इस बात का अतीव दुख था कि उन्होंने आज 27 सितम्बर को ही नंदन जी को 'परिचय साहित्य परिषद' के 'सत्यसृजन शिखर सम्मान' से सम्मानित करने का कार्यक्रम निश्चित किया था और इस सिलसिले में उन्होंने 23 सितम्बर को नंदन जी से फोन पर बात भी की थी । पर नियति को कुछ और ही मंजूर था ।

श्री उदय प्रताप सिहं ने कहा कि नंदन जी बहुमुखी प्रतिभाशाली थे । वे साहित्यकार , पत्रकार तो थे ही, उन्हें संगीत का भी बहुत ज्ञान था व बहुत अच्छी चित्रकारी भी करते थे । सभा में उपस्थित अन्य लेखकगण ने भी अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की व दो मिनट का मौन रख कर ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की । ••

साभार – 'परिचय' रिपोर्ट अनुभाग

हिंदी ब्लॉगिंग की आचार-संहिता

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि गण

महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 'हिंदी ब्लॉगिंग की आचार-संहिता' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं संगोष्ठी संपन्न हुई। समारोह का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने हबीब तनवीर प्रेक्षागृह में किया। आरंभ में सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी ने नए अभिव्यक्ति माध्यम के रूप में उभरी ब्लॉगिंग की विधा की अनंत संभावनाओं और उससे जुड़े खतरों की ओर इशारा करते हुए ब्लॉग लेखन के संबंध में आचार-संहिता विषयक विचार-विमर्श की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

तदुपरांत स्वागत भाषण में हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. अरविंदाक्षन ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों में यूजीसी और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिनिधियों और अधिकारियों को भी आमंत्रित करना चाहिए, जिससे वे जान सकें कि यह विश्वविद्यालय केवल साहित्य और उत्सवधर्मिता का ही केंद्र नहीं है, बल्कि हिंदी को तकनीक से भी जोड़ने को प्रयासरत है। जब उन्होंने कहा कि मैं आप सबका स्वागत हृदय की भाषा में कर रहा हूँ तो सभागार करतलध्वनि से गूँज उठा।

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि इंटरनेट ने राष्ट्रों की बंदिशों को तोड़ा है। उन्होंने आगे कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो उत्तर-आधुनिक विस्फोट हुआ है, वह इंटरनेट से ही संभव हो सका है, लेकिन हम यहाँ दो दिनों के लिए इसलिए भी उपस्थित हुए हैं कि हम इस बात पर बहस कर सकें कि इस माध्यम ने हमें एक खास तरह की स्वच्छंदता तो नहीं दे दी है ! उन्होंने प्रश्न उठाया कि अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में कहीं हम यह तो नहीं भूल रहे हैं कि हम सारी सीमाएँ तोड़ रहे हैं और दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचा रहे हैं। राय का मानना था कि तथ्यों को तोड़ मरोड़कर पेश करना तथा निहित स्वार्थ की सिद्धि के लिए ब्लॉग के माध्यम का दुरुपयोग करना चिंतनीय विषय है। उन्होंने यह जोड़ा कि किसी कानून द्वारा नियमित किए जाने के बजाय हमें ऐसा लगता है कि हर एक ब्लॉगर को अपनी लक्ष्मण-रेखा खुद बनानी होगी। श्री राय ने आगे कहा कि एक समझदार और सभ्य समाज के लिए जरूरी है कि उसके नागरिक अपनी लक्ष्मण रेखा खुद खींचें ताकि ऐसी स्थिति न आए कि राज्य को सेंसर लगाने की दिशा में सोचना पड़े।

'मधुमती' की पूर्व संपादक कथाकार डॉ. अजित गुप्ता ने विषय-प्रवर्तन करते हुए कहा कि ब्लॉगिंग त्वरित विचारों के त्वरित प्रस्तुतीकरण की विधा है। उन्होंने राज्य की ओर से किसी आचार-संहिता के लागू किए जाने की तुलना में ब्लॉगरों की पंचायत बनाने का सुझाव दिया जो आम नियंत्रण के सिद्धांत बना सकती है। उन्होंने हिंदी ब्लॉग जगत की कुछ बहसों के संदर्भ में कहा कि यदि मैं स्त्री संबंधी बात कहती हूँ तो यह ध्यान रखना होगा कि पुरुष भी इसे सुन रहे हैं। उन्होंने चिट्ठों का समग्र संकलन करनेवाले एग्रीगेटरों से अनुरोध किया कि वे अश्लील, खराब, बेनामी और भद्दी भाषा में लिखने वालों को समझाइश दें।

लंदन से आई हुई कवयित्री और लेखिका डॉ. कविता वाचक्नवी ने आचार-संहिता की आवश्यकता और उससे जुड़े तमाम मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की और कहा कि चिट्ठाकारी रूपी माध्यम के विस्तार के साथ शायद आनेवाले समय में आचार-संहिता की आवश्यकताएँ बढ़ेंगी। उन्होंने यह भी कहा कि खराब से खराब व्यक्ति को अच्छी चीज़ का आधिपत्य दीजिए, वह उसे खराब कर देगा, और अच्छे व्यक्ति को खराब से खराब चीज़ दीजिए, वह उसे अच्छा कर देगा। डॉ. वाचक्नवी ने भी साफ़ तौर पर माना कि आचार-संहिता को आरोपित नहीं किया जा सकता और सुझाव दिया कि आप यह कर सकते हैं कि अनाचार पर दंड का विधान कर दें। उन्होंने कहा कि वे ब्लॉगरों से संयम और उदात्तता की उम्मीद करती हैं ताकि स्वच्छंदता और अराजकता न फैले। सस्ती लोकप्रियता और निरंकुशता से बचने की सलाह देते हुए डॉ. कविता वाचक्नवी ने याद दिलाया कि हमारे लिए ब्लॉग मनोविलास नहीं बल्कि अपनी भाषा, लिपि, साहित्य और संस्कृति को बचाने का युद्ध है।

उद्घाटन सत्र में प्रख्यात कवि और संस्कृतकर्मी आलोक धन्वा ने भी ब्लॉगिंग के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने ब्लॉगिंग को विस्मयकारी विधा बताते हुए इस माध्यम को सामाजिक सरोकारों से जोड़ने की वकालत की। आलोक धन्वा ने ब्लॉगिंग की तुलना रेल के चलने से करते हुए बताया कि शुरुआत में जैसे रेल यात्रा करने से लोग डरते थे लेकिन आज यह हमारी आवश्यकता बन गई है वैसे ही शायद अभी ब्लॉगिंग के शुरुआती दौर में इसके प्रति हिचक है लेकिन आने वाले समय में यह जन समुदाय की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकती है। आलोक धन्वा ने अपने वक्तव्य में आगे कहा कि हम आजकल सबसे कठिन दौर से गुज़र रहे हैं। इतना कठिन समय, पहले कभी नहीं रहा; द्वितीय विश्व युद्ध और अन्य संकटों से भी अधिक कठिन समय के दौर से हम गुज़र रहे हैं जिसमें लोकतंत्र के लिए बहुत कम जगह बची है। आचार-संहिता की बात करते हुए उन्होंने कहा कि समय और समाज की नैतिकता ही अभिव्यक्ति की नैतिकता हो सकती है। दुनिया कैसे बेहतर बने, इस दिशा में प्रयास करने वाली आचार संहिता ही ब्लॉगिंग की आचार-संहिता हो सकती है। उन्होंने इस बात पर संतोष जताया कि ब्लॉगिंग सबसे कम पाखंडवाली विधा है।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता हैदराबाद से आए प्रो. ऋषभ देव शर्मा ने की। अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रो. शर्मा ने आचार-संहिता, नैतिकता, बेनामी ब्लॉगर और संबंधित मसलों पर अपने विचार व्यक्त किए। बेनामी ब्लॉगरों के बारे में अपनी राय व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि छद्म पहचान को ब्लॉग जगत में प्रोत्साहित करना पाखंड को प्रोत्साहित करने के समान है। उन्होंने बताया कि ब्लॉग जगत की आचार संहिता की जगह इंटरनेट की नैतिकता पर व्यापक परिप्रेक्ष्य में चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि नैतिकता का स्वर्णिम सिद्धांत यह है कि जैसा व्यवहार हम दूसरों से चाहते हैं, हम भी वैसा ही व्यवहार दूसरों से करें। उन्होंने इंटरनेट की दुनिया को विशुद्ध आभासी दुनिया मानने से इन्कार करते हुए कहा कि यह आभासी दुनिया वास्तव में वास्तविक दुनिया का विस्तार है। प्रो. शर्मा ने कहा कि मेरी चिंता का कारण बच्चे हैं जो झूठी पहचान बनाकर इंटरनेट और ब्लॉग के माध्यम से गलत आचरण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बेनामी बड़े-बड़े काम करते होंगे, मैं उनका अभिनंदन करता हूँ, लेकिन इसे नियम नहीं बनाया जाना चाहिए क्योंकि पाखंड हर जगह निंदनीय है। ब्लॉगिंग कोई खिलवाड़ नहीं है, सामाजिक और नैतिक कर्म है। अत: जिस बात को सार्वजनिक रूप से नहीं कह सकते वह ब्लॉग पर भी कहने का हक हमें नहीं है। हममें यह हिम्मत होनी चाहिए कि जिसे हम सही समझते हैं उसे कह सकें। प्रो. शर्मा ने उदाहरण सहित बताया कि यदि कमेंट व्यक्तिगत आक्षेप, अशलीलता और अनैतिकता वाले हों तो उन्हें हटाने का अधिकार होना चाहिए लेकिन स्वस्थ आलोचनाओं को सम्मान मिलना चाहिए भले ही वे कटु हों। ब्लॉग को संवाद का माध्यम बनाया जाए, अखाड़ा नहीं। पारस्परिक शिष्टाचार जो हम अपने आम जीवन में बरतते हैं, उसे ब्लॉगजगत में भी अपनाना चाहिए। डॉ. शर्मा ने यह भी ध्यान दिलाया कि ब्लॉग को समाज और नैतिकता के अतिरिक्त बोझ से लादने के बजाय उसे अपने भीतर की उदात्तता का दर्पण बनाना आवश्यक है।

संचार विभाग के विभागाध्यक्ष अनिल कुमार राय ने धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा - 'जहाँ आधुनिक संचार माध्यम समाप्त होते हैं वहाँ से इसकी शुरुआत होती है। यदि हम टिप्पणियों का मॉडरेशन करने लगे तो फिर यह तो एक संपादक की उपस्थिति ही हुई।'

देश भर से आए लगभग 25 ब्लॉगरों ने उद्घाटन सत्र के बाद चार समूहों में आचार-संहिता के विविध आयामों पर अलग-अलग गहन चर्चा की जिसके निष्कर्षों को दूसरे दिन परिचर्चा सत्र में प्रस्तुत किया गया।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र में सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के सामूहिक ब्लॉग 'हिंदी-विश्व' का लोकार्पण कुलपति के हाथों संपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि उक्त ब्लॉग डॉ. कविता वाचक्नवी के निर्देशन और सहयोग से बनाया गया है और प्रीति सागर को ब्लॉग का मॉडरेटर नियुक्त किया गया है। उदयपुर से आई हुई डॉ. अजित गुप्ता के लघुकथा संग्रह का लोकार्पण भी कुलपति विभूति नारायण राय के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ। ••

डॉ. कविता वाचक्नवी